THE SCIENCE WORLD
A Monthly e Magazine
ISSN:2583-2212
Jan 2024 Vol.4(1), 225-227

Popular Article

सुगंधित वनस्पति से किसान को कम खर्चे में ज्यादा आय

डॉ. रितेश लिम्बात[1] डॉ.अजय नायक[2],डॉ. आशीष मीणा[3],
[1]सहायक प्राध्यापक , पशु व्याधिकी विभाग
[2]सहायक प्राध्यापक ,पशु प्रबंधन एव पशु पालन विभाग
[3]सहायक प्राध्यापक , पशु व्याधिकी विभाग
एम्. बी वेटेरिनरी कोलेज डूंगरपुर राजस्थान
https://doi.org/10.5281/zenodo.10501143

साधारण नामः जिरेनियम, रोज जिरेनियम

किस्मों

अल्जीरियाई, रीयूनियन, आईआईएचआर-8, कोडाइकनाल 1 और मिस्र खेती के तहत लोकप्रिय किस्में हैं।

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 12.01.2024

सुगन्धित पौधों की खेती किसानों के लिए अतिरिक्त आमदनी एक प्रमुख जरिया बन सकती है। जेरेनियम भी एक ऐसा ही सुगंधित पौधा है जिसका तेल बेहद कीमती होता है। जिरेनियम पौधे की पत्तियों और तने से सुगंधित तेल निकला जाता है।

जेरेनियम मूल रूप से दक्षिण अफ्रीका का पौधा है। इसकी खेती मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, बिहार, हिमाचल प्रदेश और उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में होती है।

जेरेनियम के पौधे से प्राप्त तेल काफी कीमती होता है। भारत में इसकी औसत कीमत करीब 12 से 18 हजार रुपये प्रति लीटर है। मात्र चार माह की फसल में लगभग 80 हजार रुपये की लागत आती है और इससे करीब 1 50 लाख रुपये तक मुनाफा आता हे. चार महीने बाद उसके अंदर 3 से 4 बार साल तक कटाई करके कम लागत में ज्यादा आय आती है

जिरेनियम के तेल की आवश्यकता

- सुगंधित इत्तर बनाने के लिए
- कोस्मेटिक मार्किट में
- झुर्रियों को कम करता है।
- मूत्रवर्धक गुण होते हैं पेशाब बढ़ाता है,
- मुँहासे, जिल्द की सूजन और अन्य त्वचा रोगों का इलाज कर सकता है
- तनाव से राहत दिलाने में मदद करता है
- सूजनरोधी गुण होते हैं और यह घावों को भरने में मदद करता है
- श्वसन संक्रमण से बचा सकता है
- दांतों और मसूड़ों के स्वास्थ्य के लिए अच्छा है
- रजोनिवृत्ति के प्रभावों से राहत दिलाने में मदद करता है
- हार्मोनल संतुलन के लिए अच्छा है
- रक्तचाप को कम करने में मदद करता है

प्रावधन

जिरेनियम का प्रवर्धन तने की कलमों द्वारा किया जाता है। 3-4 गांठों और टर्मिनल कली के साथ पत्तियों के एक सुगठित मुकुट के साथ वर्तमान सीज़न की वृद्धि से लगभग 10-15 सेमी की कटिंग ली जाती है। कटिंग के बेसल हिस्से को 200 पीपीएम आईबीए का रसायन में डुबाने से मूल की उपजाऊता बढ़ जाती है। जिसे नर्सरीमें अच्छे से देखभाल करके 60 दिनों में रोपण के लिए तैयार हो जाएंगे।

मिट्टी की आवश्यकता

जिरेनियम की फसल के लिए अच्छी जल निकासी की आवश्यकता होती है कार्बनिक पदार्थ से भरपूर छिद्रपूर्ण मिट्टी। यह फसल उथली जड़ वाली फसल है और सबसे अच्छी तरह पनपती है 5.5 से 7.0 पीएच मान वाली लाल-लैटेरिटिक मिट्टी, हालांकि यह कैल्शियम से भरपूर मिट्टी के लिए आदर्श है झरझरा मिट्टी. पूरे वर्ष समान रूप से वितरित 100 से 150 सेमी की वार्षिक वर्षा के साथ 1000 - 2400 मीटर तक की ऊंचाई आदर्श है।

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 12.01.2024

भूमि की तैयारी

जिरेनियम की फसल लंबे समय तक चलने वाली फसल है इस लिए जमींन की तैयारी बहतर होनी चाहिए खेत/भूमि कोमल होनी चाहिए ढलान और तेज़ हवाओं से बचने के लिए उचित आश्रय होना चाहिए।

रोपण

अच्छी जुताई की स्थिति के लिए खेत की पूरी तैयारी आवश्यक है। 2 महीने पुरानी जड़ वाली कलमों को अप्रैल-मई के दौरान 45 x 45 सेमी की दूरी पर लगाया जाता है।

सिचाई

जिरेनियम आमतौर पर वर्षा आधारित फसल के रूप में उगाया जाता है। शुष्क अवधि के दौरान सिंचाई करने से उपज में वृद्धि होती है। सिंचाई की आवृत्ति मिट्टी के प्रकार, पौधे पर निर्भर करती है विकास चरण, और जलवायु। हालाँकि, इस फसल को मध्यम और भारी सिंचाई की आवश्यकता होती

छंटाई

जब झाड़ी में गिरावट के लक्षण दिखाई दें तो झाड़ियों की छंटाई आवश्यक है। शाखाओं को 4-5 वर्ष में एक बार 15-20 सेमी छोड़कर काट दिया जाता है।

प्लांट का संरक्षण

कीट,निमेटोड नर्सरी में नेमाटोड (मेलोइडोगाइन हैपला) को नियंत्रित करने के लिए, जून और दिसंबर में 6 महीने में एक बार कार्बोफ्यूरान 2 किलोग्राम ए.आई./हेक्टेयर डालें।

कटाई

जिरेनियम की फसल की कटाई खेत रोपाई के चार महीने बाद उस अवस्था में पहोच जाती हे की आप उसकी कटाई कर सकते है। जब पत्तिया हल्की हरी होने पर हम निर्धारण कर सकते है की इसकी कटाई हो सकती है। रोपण के वर्ष में 7-8 महीने में केवल एक कटाई की जा सकती है और उसके बाद एक वर्ष में 3 या 4 कटाई की जा सकती है। 6-12 गांठों वाला कोमल टिप भाग फसल के लिए सामग्री का निर्माण करता है। काटी गई सामग्री को दो से तीन घंटे तक छाया में सुखाया जाता है और आसुत किया जाता है।

उपज

जड़ी-बूटी: 20 - 25 टन/हेक्टेयर

तेल उपज: 15 - 20 किग्रा/हेक्टेयर

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 12.01.2024